International Journal of Arts & Education Research

भारतीय सुरक्षा के लिए हिन्द महासागर का भू-स्त्रातिजिक स्वरूप

डॉ.सचिन कुमार श्रीवास्तव*[1]

[1]डी ए वी कॉलेज, देहरादून।

प्रारूप

पृथ्वी का तीन चौथाई भाग अर्थात् 367 मिलियन वर्ग किञ्मी0 क्षेत्र जल से घिरा है। मनुश्य ने थल के प-चात् जल का उपयोग आवागमन तथा व्यापारिक उपयोग के लिए करना प्रारम्भ किया। आज भी व्यापारिक तथा सैनिक गतिविधियों के लिए जल का उपयोग थल तथा वायु की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। वि-व के महासागरों में हिन्द महासागर का स्थान क्षेत्रफल की दृश्टि से तीसरा है। इसका क्षेत्रफल लगभग 7,25,20,000 वर्ग किमी0 है। यह वि-व के कुल जल क्षेत्र का 20,7 प्रति-ात है तथा पूरे ग्लोब के क्षेत्र का 14 प्रति-ात है। यह 10,400 किमी0 लम्बा तथा 9,600 किमी0 चौड़ा है। हिन्द महासागर की तटीय सीमा विस्तार लगभग 66,526 किमी0 है। हिन्द महासागर का विस्तार प्रशान्त महासागर का लगभग आधा तथा एटलांटिक महासागर से थोड़ा ही छोटा है।[1] यह भूमध्यसागर से लगभग 35 गुना बड़ा है। तीन तरफ से थल से घिरा यह महासागर मानचित्र तथा उपग्रह चित्रों में एक बड़े प्राकृतिक खाड़ी क्षेत्र की तरह प्रतीत होता है। तीन महाद्वीपों अफ्रीका, एि-या तथा आस्ट्रेलिया से घिरा होने के कारण हिन्द महासागर का भू-राजनीतिक एवं भू-स्त्रातिजिक महत्व बहुत अधिक है। यह वि-व का एक मात्र ऐसा महासागर है जिसका नाम इसके तटीय दे-ा से सम्बन्धित है।

IJAER

*Corresponding Author